छत्तीसगढ की जन वेबसाइट

www.cgnet.in

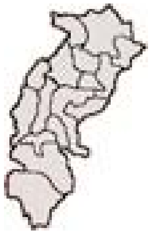

वॉटरमैन ऑफ छत्तीसगढ़

बासी मा उफान

शुभांशु चौधरी

कुछ अखबारों में यह परम्परा रही है कि वे साल के पहले दिन पॉजिटिव स्टोरीज ही छापते हैं अर्थात ऐसी कहानियां जिसमें हम प्रेरणा ले सकें और अपने नए साल को एक बेहतर दिशा दे सकें।

यह एक अच्छी प्रथा है और यह चूंकि सन् 2007 का पहला बासी मा उफान है इसलिए मैंने सोचा कि मुझे भी किसी अनुकरणीय व्यक्ति या प्रयोग के बारे में लिखना चाहिए।

प्रताप नारायण सिंह और उनके सरगुजा ग्रामीण विकास संस्थान के पानी रोकने के प्रयोग के बारे में मैंने दिल्ली में कुछ लोगों से सुन रखा था।

संयोगवश 31 दिसंबर की रात मैं अंबिकापुर में था। मैंने प्रताप भाई कोयह पूछने के लिए फोन किया कि क्या नए साल का पहला दिन मैं उनके साथ बिता सकता हूं ? प्रतापभाई राजी हो गए।

वाड्रफनगर वही इलाका है जहां से 15 साल पहले भूख से मौतों की राजनीति की शुरूआत हुई थी। शायद आपको रिबई पण्डो की कहानी अब भी याद हो जिसके घर हुई भूख से मौतों को लेकर तत्कालीन विपक्ष के नेता दिग्विजय सिंह ने खूब तमाशा किया था और प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव भी 'आंसू बहाने' वाड्रफनगर पहुंचे थे।

वाड्रफनगर के कुछ पहले ही रजखेता गांव के लि सड़क मुड़ जाती है जहां प्रतापभाई रहते हैं।

छत्तीसगढ़ में नवंबर में धान कटने के बाद खेत सूखे और वीरान ही नजर आते हैं पर रजखेता के खेतों में गेहूं की सुखद हरियाली थी।

प्रतापभाई ने बताया 'जब मैं 1990 में सबसे पहले इस इलाके में आया था तब यह पूरा क्षेत्र सूखे के लिए विख्यात था और फिर 1992 में रिबई पण्डो काण्ड ने इसे अत्यंत गरीब क्षेत्र के रूप में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय ख्याति भी दिलाई'।

पर यह ख्याति तात्कालिक ही थी और थोड़े दिन बाद सभी वाड्रफनगर को भूल गए चाहे वे राजनेता हों या पत्रकार। क्रांतिकारी भाषण और लेखों के लिए वाड्रफनगर और रिबई पण्डो का उपयोग अब भी जारी है।

प्रताप भाई बताते हैं 'छत्तीसगढ़ के और हिस्सों की तरह वाड्रफनगर में भी 1400 मिलीमीटर बारिश होती है और बारिश के कुछ महीने बाद ही यहां आदिवासी भूख से मरने लगते हैं।'

सन् 2002 में सरगुजा में 500 से अधिक लोगों की भूख से मौत हुई, जिसमें अकेले वाड्रफनगर में 130 लोग मारे गए थे। यह अलग बात है कि दिग्विजय सिंह की तरह उस समय का विपक्षी दल भाजपा इन मौतों की राजनीतिक रोटी भी नहीं सेंक पाया।

प्रतापभाई ने कहा 'तुलनात्मक रूप से पंजाब में औसतन 600 मिलीमीटर बारिश होती है और वहां का किसान देश का सबसे समृद्ध किसान है इसलिए मुझे समझ में आया कि पानी की कमी यहां की समस्या नहीं है वरन यहां उस पानी को रोकने की जरूरत है जो बरसात के बाद बहकर बरबाद हो जाता है।'

'जब सबसे पहले मैं यहां आया और हमने कुआं खोदने की कोशिश की तो उसमें काफी दिनों तक सिर्फ बालू ही निकलती रही और अपने उपयोग के लिए भी हमें दूर से पानी ढोकर लाना पड़ता था।'

'1995 में हमने गांव वालों के साथ रजखेता से सटे पहाड़ियों पर पानी रोकने के लिए बण्ड बनाने शुरू किए जिससे बरसात का पानी उन बण्डों पर थोड़ी देर रूक सके और बहने की बजाए रिस कर जमीन के नीचे चला जाएं'

'फिर धीरे-धीरे हमने नालों पर मिट्टी के बांध बनाने शुरू किए और एक-एक कर 8 छोटे-छोटे बांध बनाए। इस काम में हमें एक संस्था से आर्थिक मदद मिली इस काम में 41 लाख का खर्च आया जिसमें लगभग 30 लाख रजखेता के ग्रामीणों को मजदूरी के रूप में मिली।'

'आज रजखेता में हम लगभग 80 प्रतिशत बारिश के पानी को रोक लेते हैं। पानी रोकने का काम शुरू करने के 5 साल के अंदर रजखेता में पानी का स्तर 40 फीट से अधिक ऊपर आ गया। 1995 में रजखेता में एक भी ट्यूबवेल नहीं था आज यहां 20 ट्यूबवेल हैं'।

'1995 में दूसरी फसल के बारे में कोई सोचता भी नहीं था आज 70 प्रतिशत से अधिक किसान दूसरी फसल ले रहे हैं। 1995 में यहां 90 कुएं थे आज उनकी संख्या बढ़कर 350 से अधिक हो गयी है।'

'आज हमारे दो बांध टूट गए है उनमें मरम्मत की जरूरत है और बढ़ती ट्यूबवेल की संख्या के कारण जलस्तर थोड़ा नीचे गया है। इस विषय पर हमें ध्यान देने की जरूरत है कि हम जितना पानी रिचार्ज करते हैं अगर उसी अनुपात में ट्यूबवेल से पानी निकालें तो दिक्कत की कोई बात नहीं है।'

'1995 में रजखेता में 5 हजार रुपए प्रति एकड़ में भी कोई जमीन नहीं खरीदता था आज उसी जमीन की कीमत एक लाख प्रति एकड़ से ऊपर है और लोग तीसरी फसल की भी सोच रहे हैं।'

प्रताप भाई बताते हैं 'पानी रोकने का काम कठिनाइयों भरा रहा है। जब पहली बार बांध भरा और उसमें एक आदमी डूब कर मर गया तो आदिवासियों ने सोचा कि मैंने उसकी बलि चढ़ा दी है और सारे लोग लाठी, टंगिया लेकर मुझे मारने और भगाने के लि पहुंच गए। इस तरह की अनेक कहानियां है।'

पर अब रजखेता के प्रयोग को देखकर आसपास के गांवों में भी लोगों ने पानी रोकने का काम शुरू कर दिया है और पड़ोस के कई गांवों में भी मुझे गेहूं के हरे भरे खेत दिखे।

पड़ोस के पण्डरी गांव में प्रतापभाई मुझे डेढ़ लाख के खर्च से बना एक बांध दिखाने ले गए। पण्डरी गांव के जल बिरादरी समूह के प्रमुख बसंतभाई ने बताया 'इस बांध के कारण पिछले दो साल से 500 एकड़ में किसान दूसरी फसल ले रहे है पर सरकार ने हमारा पैसा रोक दिया है और जिन व्यापारियों ने हमने पत्थर खरीदे थे वे हमें रोज उनके बकाए के लिए परेशान करते हैं।'

प्रतापभाई ने बताया 'हमने बैंक से कमर्शियल रेट पर 50 हजार का लोन लेकर ग्रामीणों की मजदूरी तो पटा दी है पर पत्थर व्यापारियों का पैसा अभी तक बाकी है। बैंक से जो लोन लिया है उस पर भी हम पर कई हजार का ब्याज चढ़ चुका है। कुछ बाबुओं को कुछ धन दे दें तो यह पैसा शायद तुरंत मिल जाए। कभी-कभी ऐसा लगता है कि अब हमारे जैसे लोग इस दुनिया में काम करने के लिए फिट नहीं रहे।'

पर प्रतापभाई ने विश्वास हारा नहीं है। वे कहते हैं 'धान की फसल से किसानों की बहुत कम आमदनी होती है। उनकी आय बढ़ाने की जरूरत है इसके लिए अब हम कोसे का प्रयोग कर रहे हैं। इस इलाके में सेमर के पेड़ बहुत हैं और हमने पाया है कि उस पर रेशम का प्रयोग कियाजा सकता है। यद्यपि इस प्रयोग के लिए हमें अब तक कोई आर्थिक मदद नहीं मिली है पर हमें लगता है कि एक एकड़ में कोसे से किसानों को लगभग 25 हजार रुपए की सालाना आमदनी हो सकती है।'

वे अब कम्यूनिटी रेडियो का प्रयोग भी करना चाहते हैं। वे कहते हैं यहां सड़कें इतनी खराब हालत में है कि गांवों तक पहुंचने में ही हमारा बहुत समय जाया हो जाता है। हमें आशा है कि कम्युनिटी रेडियो के शुरू होने के बाद हम दूर दराज के आदिवासी गांवों तक और प्रभावी रूप से पहुंच सकेंगे और वहां भी ऐसे ही प्रयोग कर सकेंगे। क्या नए साल में छत्तीसगढ़ इन प्रयोगों से कोई प्रेरणा ले सकता है ?

(लेखक बीबीसी के पूर्व पत्रकार हैं और सिटीजन जर्नलिज्म के प्रयोग छत्तीसगढ़ नेट www.cgnet.in से जुड़े हैं।)

PACS Madhya Pradesh & Chhatisgarh